वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

सितम्बर – 2024

- संसार में दुःख क्यों हैं उनका निवारण कैसे – (3)
- अपने जीवन का फिकर
- तर्क शक्ति का अभाव
- देव प्रभावों की एक दिल पर .....
- आत्मिक उच्च जीवन का एक .....
- देव धर्म में मोक्ष की क्या धारणा है?
- शुभ संग्राम
- सत्य धर्म बोध उत्सव

निज साधन विषयक पत्र

कुछ दिनों से भगवान देवात्मा की कृपा से मुझे ऐसे महान और विशेष हितकर्ता और मेरी आत्मा की रक्षा के फरिश्ते और मुझे माता - पिता की तरह बचाने वाले श्रद्धेय श्रीमान बलदेव सिंह जी की कुर्बानियां बार - बार सामने आकर मुझे झंझोड़ रही हैं कि जिस प्रकार माता - पिता ने मेरी शारीरिक रक्षा की है, रोगों से बचाया है, शारीरिक स्वास्थ्य दी है उससे बढ़कर श्रद्धेय श्रीमान जी ने मेरी आत्मिक रक्षा के मेरे भीतर भाव पैदा किए हैं। मैं अन्धा था, मुझे कोई पता नहीं था कि आत्मा क्या है इसके रोग क्या हैं, यह मरता भी है या नहीं। श्रद्धेय श्रीमान जी ने मेरे भीतर भगवान् देवात्मा के देव प्रभाव पहुंचाकर मेरी रुहानी बीमार आंखों का आप्रेशन करवा दिया। मेरे हृदय में मेरी तुच्छ योग्यता अनुसार कुछ - कुछ श्रद्धा का भाव पहले पैदा किया फिर उसे उन्नत करके दूसरों के गुण देखने के योग्य बना दिया। श्रीमान जी ने मानों मुझ आत्मिक मुर्दे को नई अध्यात्मिक दुनिया में पैदा कर दिया या यूं कहा जाए कि मेरे लिए नई दुनिया खोल दी। अब कई बार पिछली दुनिया को याद करके, अपने पिछले साथी और दुनियावी सम्बन्धियों की संगत को याद करके तो हृदय में भय से कंपकपी होने लगती है। ऐसा लगता है जैसे पिछले नारकीय जीवन के विचार से जो नर्क की जूनि को भोग कर अब श्रीमान की कृपा से नई स्वर्ग की जूनि में आ गया हूँ। जैसे कि पुराने धर्म मतों के अनुसार जो चौरासी का मिथ्या चक्र दिमाग़ में डाला हुआ था, श्रद्धेय श्रीमान जी ने देवात्मा के देव प्रभावों के कुल्हाड़े चला - चला कर काट दिया है और नए स्वर्ग में ला कर खड़ा कर दिया है। लेकिन मनुष्य को अक्ल तब आती है जब किसी वस्तु का अभाव हो जाता है। अब पश्चाताप हो रहा है कि जो लोहे को सोना बनाने का समय था वह समय अपनी "मैं" के वशीभूत रहकर गंवा दिया है। अब यह पछतावा बनकर, सारी उम्र नासूर बनकर चुभता रहेगा। अब भी श्रद्धेय श्रीमान जी की पवित्र वाणी, उनके उपदेश कानों में गूंजते रहते हैं। वह मुझे कहा करते थे..... सिंह जी अब समय है लाभ उठा लो, लाभ उठा लो, लेकिन मैं अन्धा अपनी मस्त चाल में मस्त, उनकी तड़प की आवाज़ को पहचान न सका। आज पता चलता है कि वह अपने पवित्र हृदय में कहीं न कहीं मेरे लिए विशेष जगह रखते थे, विशेष तड़प रखते थे। उनका गर्मी में मच्छरों में आकर सोना, सर्दियों की धुन्ध कोहरे में हम तक पहुंचना अब मुझे याद आता और तड़पाता है। हमारे हित की खातिर कई कई घण्टे सभाऐं करवाना, उपदेश देना बस अब एक याद ही रह गई है। कितने अवसर, कितनी घड़ियाँ कितना समय गुज़ार दिया.....

काश! कि मैं अपने जीवन का जो बाकी तिल - फुल हिस्सा बचा है उसको उनका पवित्र आर्शीवाद और उनका हुक्म (आदेश) समझकर टूट - फूट कर समाज की सेवा में, गुरू मिशन के अद्वितीय कार्य में काम आकर कुछ ऋण परिशोध करके अपना आत्मिक हित कर सकूं। भगवान् देवात्मा के लासानी बल को पाकर और सहायकारियों की सहायता से अपने जीवन की जो कुछ पूंजी शेष बची है उसको सार्थक कर सकूं। भगवान के दर का एक तुच्छ भिक्षुक और श्रद्धेय श्रीमान जी का अपराधी सेवक.....।

(सुखदेव सिंह जोसन 8/8/2024)

धर्म जीवन

खण्ड 35 अंक 9
सितम्बर – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

संसार में दुःख क्यों हैं उनका निवारण कैसे – (3)

पिछले दो अंकों में दिया गया था कि मनुष्य को अपने द्वारा और अन्य मनुष्यों के द्वारा जो दुःख मिलते हैं, वह मनुष्य के नीच जीवन की उपज हैं। दो नीच अनुराग – नशा अनुराग और आलस्य अनुराग के द्वारा मनुष्य मात्र में जो दुःखों की उत्पति होती है, उस पर गुरू महाराज की सत्य शिक्षा के अनुसार अपने तुच्छ विचार प्रगट किए गए थे।

यह दोनों नीच अनुराग शरीर सम्बन्धी अनुराग हैं, यह शरीर का तो नाश करते ही हैं, आत्मा के भी विनाश का कारण बनते हैं। यह बड़ी गूढ़ सच्चाई है, जिसकी समझ गुरू महाराज की रोशनी के बिना कभी नहीं आ सकती।

तीसरा शरीर सम्बन्धी नीच अनुराग है स्वाद अनुराग। स्वाद का अनुभव या अलग – अलग पदार्थों के स्वाद जैसे खट्टा, मीठा, नमकीन, कसैला, कड़वा, खारा आदि का बोध एक कीमती बोध है। किसी पौष्टिक खाने की वस्तु को ठीक ढंग से स्वाददार बनाया जा सकता है परन्तु मनुष्य के लिए यह दुखद है कि वह एक – एक स्वाददार चीज़ को खाते – खाते उसका अनुरागी व गुलाम बन जाता है।

इस गुलामी के अधीन होकर :–

(1) वह ऐसी चीजें खाता और पीता है जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। डाक्टरों के मना करने पर भी वह उन स्वाददार चीज़ों से परहेज़ नहीं कर पाता। कोई भी जीवधारी मरना नहीं चाहता, परन्तु मनुष्य ऐसा जीवधारी है, जो स्वाद के आगे अपने घुटने टेक देता है और जिन्दा रहने के मूल नियम को भी भंग करता रहता है।

एक नौजवान लड़के को टाईफाईड हो गया था, वह ईलाज़ से बेहतर भी हो गया। उसे तली व वसा वाली चीज़ों से परहेज़ बताया गया था। एक बार घर में पूड़े बने थे जो कि बीमारी के कारण उसे नहीं दिए गए। उसकी माता ने बचे हुए पूड़े ऊपर एक छिक्के (टोकरी) में रख दिए,जब वह किसी के काम से स्वयं बाहर चली गई तो वह लड़का उठा और किसी प्रकार छिक्के से कुछ पूड़े इधर उधर बिख़ेर दिए और कुछ खा लिए। माता के आने पर पूछने पर बताया कि बिल्ली आई थी, उसने यह सब पूड़े बिख़ेर दिए। परन्तु नेचर के नियम अटल हैं, कुछ ही देर में उसे लूज़ मोशन होने लगी, तो

उसके स्वाद अनुराग की पोल खुल गई। उसके बाद डाक्टर भी उसे बचा नहीं सका। मनुष्य एक-एक स्वाद के आगे बहुत बेबस हो जाता है और अपनी ज़िन्दगी को भी दांव पर लगा देता है कोई भी नीच अनुराग किस क़दर खौफनाक!

(2) स्वाद अनुराग के वश में होकर मनुष्य भोजन करने के अलावा भी ज़रूरत से अधिक खाता है। यदि कोई स्वादिष्ट वस्तु सामने आ जाए तो वह अपने आपको खाने से रोक नहीं सकता। फिर कभी कोई हाज़मेदार चूर्ण का सहारा लेता है और कोई सोडा पीता है आदि आदि। परन्तु खाने की ज़्यादती की सज़ा पेट को मिलती ही है। इस प्रकार बदपरहेज़ बन कर वह रोगों का घर बन जाता है शारीरिक बल भी घटने लगता है। पाचन प्रणाली पर बुरा प्रभाव पड़ता है। आयु भी घटती है। स्वाद अनुरागी जन खाने में संयम नहीं रख सकता। स्वाद अनुराग की तृप्ति करते -करते वह स्वादिष्ट वस्तुओं का पूरी तरह से गुलाम बन जाता है।

(3) स्वाद के लिए मांसाहार व अण्डे आदि का प्रयोग करता है। साधारणत: यह तर्क दिया जाता है कि इससे शारीरिक बल बढ़ता है। यह बात पूर्णत: तर्कहीन है। आजकल खोजों से यह सिद्ध भी हो गया है कि शाकाहारी भोजन अधिक स्वास्थ्यकर व बलवर्द्धक होता है। हमारे कितने प्लेयर शाकाहारी हैं, उनमें बल की कमी नहीं। हाथी सबसे ताकतवर जानवर है, वह पूर्णत: शाकाहारी है। मांसाहार न केवल शरीर के लिए हानिकारक है बल्कि वह मनुष्य की न्याय व दया भावना पर कुठाराघात करता है। मनुष्य के स्वाद अनुराग की तृप्ति के लिए हर रोज़ कितने ही जानवरों का बेरहमी से कत्ल कर दिया जाता है। उनके दु:ख के एहसास अथवा दर्द की चीख़ों का प्रभाव उस मांस में होता है, जो मनुष्यों को भी अत्याचारी बना देता है और तरह-तरह के रोगों को भी उत्पन्न करता है। उन पशुओं को जो दूसरे पशुओं और मनुष्यों को अपना शिकार बनाते हैं, उन्हें हम हिंसक कहते हैं, तो क्या जानवरों को मारकर या मरे हुए जानवरों को खाकर मनुष्य हिंसक नहीं बनता? इस हिंसा से जो आत्मा का नाश होता है, उसकी तो समझ परम पूजनीय भगवान की रोशनी के बिना आनी असम्भव ही है। सिर्फ मानसिक रूप से समझ आने से मनुष्य की पेश नहीं जाती कि वह स्वाददार परन्तु हानिकारक चीज़ों से परहेज़ कर सके।

(4) एक-एक जन नमक मिर्च, मसालों, अचारों, चटनियों का इतना गुलाम हो जाता है कि उसको ज़रूरत से अधिक प्रयोग करने लगता है। ज़्यादा मिर्च मसाले पाचन शक्ति को कमज़ोर करते हैं, खट्टे डकार आने लगते हैं और खून में विषाक्त पदार्थ जाकर रोगों की उत्पत्ति करते हैं। परन्तु स्वाद अनुरागी जन मसालेदार चीज़ों का आदी होकर अपनी सेहत को भी ताक पर रख देता है।

(5) मनुष्य की स्वाद अनुराग की गुलामी उसे यहां तक बदपरहेज़ बना देती है कि शूगर की, ब्लड प्रैशर की, बीमारी होने पर भी वह न केवल परहेज़ नहीं कर सकता बल्कि डाक्टरों के मना करने पर भी चोरी छुपे उन चीज़ों का प्रयोग करने लगता है। स्वाद अनुराग की तृप्ति के लिए बच्चे पैसों की भी चोरी करने लगते है। एक लड़की को चीनी खाने का इतना स्वाद पड़ गया कि 6-7 साल की उमर में वह शूगर की बीमारी की शिकार हो गई और 1-2 वर्ष में ही इसी

बीमारी से उसका देहान्त हो गया।

वैसे देखने वा सुनने में स्वाद अनुराग इतना भयभीत नहीं करता, परन्तु इसका गुलाम बनते-बनते मनुष्य कैसे मौत को गले लगाते हैं वह हमारे शूगर के मरीज़ों व ब्लड प्रैशर के मरीज़ों के आंकड़े बताते हैं।

छोटे-2 बच्चे चाकलेट, बर्गर व अन्य बाज़ारी चीज़ें खाकर मोटापे का शिकार हो रहे हैं। माता-पिता स्वयं उन्हें इन चीज़ों का चस्का डालते हैं। उनके दांत खराब हो रहे हैं। हैरानी की बात है कि बच्चों को बचपन में हार्ट अटैक तक हो रहा है, शूगर हो रही है, परन्तु माता पिता उन्हें प्यार प्यार में मौत की ओर घसीट रहे हैं। बचपन में बढ़ी हुई स्वाद की गुलामी उनको नौजवानी में बिमारियों व मौत का शिकार बना रही है।

हमें स्वाद अनुराग को समझने और अपने आप पर कंट्रोल करने की नितान्त आवश्यकता है। हम में से कोई इससे बचा हुआ नहीं है केवल दर्जों का फर्क है।

हम में से जो जो जितना ज्यादा परहेज़गार है या इस विषय में जाग्रत है, वहां तक नेचर के नियमानुसार वह स्वस्थ्य जीवन का संभोग करते हैं और लम्बी उमर पाने के अधिकारी बनते हैं।

स्वाद अनुराग व इसकी गुलामी को समझना और उसे जितना हम घटा सकते हैं, उतना ही वह हमें शारीरिक रूप से सुख प्रदान कर सकता है। हमारे सतगुरू ने एक-एक नीच अनुराग पर शिक्षा ही नहीं दी बल्कि उन्होंने अपने जीवन में यह आदर्श हमारे सामने रखा है।

उस पुराने समय में वह तोलकर अपना भोजन खाते थे। यदि एक बार उन्हें पता लग जाता कि फलां वस्तु सेहत के लिए हानिकारक है, तो वह वस्तु चाहे कितनी ही स्वाददार क्यों न हो, वह फौरन छोड़ देते थे। 74 वर्ष की उम्र में उन्होंने पढ़ा कि कानो (खदानों) से निकलने वाला नमक हमारे शरीर का भाग नहीं बनता बल्कि वह तरह-तरह के रोगों की उत्पत्ति करता है, उसी समय उन्होंने नमक खाना छोड़ दिया था।

एक बार श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी को गुरू महाराज ने खाने पर निमन्त्रित किया, श्रीमान जी को कुछ अधिक मात्रा में खाते देखकर उन्होंने फरमाया- "ईश्वर सिंह हमने आपको दावत दी है अदावत नहीं" उनका फरमाने का भाव था कि अधिक मात्रा में खाओगे तो आपके शरीर को हानि पहुँचेगी। ऐसे थे हमारे अद्वितीय गुरू और उनकी अद्वितीय शिक्षा।

परम पूजनीय भगवान ने एक बार फरमाया था कि एक स्त्री अफीम खाती थी, उसके पास अफीम खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, तो अफीम के ठेकेदार अफीम निकालकर जो ठीकरें जमीन में दबा देते थे, वह उन्हें खोदकर उनमें पानी डालकर पीती, कैसी कृपापात्र अवस्था!

परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं:- "किसी भी चीज़ का गुलाम बन जाना कितना भयानक! इसलिए तुमको स्वाद वासना का दास नहीं बनना चाहिए। एक-एक जन पर जब नीच अनुराग बढ़ते-बढ़ते उस पर काबू पा लेता है, फिर उससे मोक्ष पाना असम्भव हो जाता है। तब नितान्त आवश्यकता है कि तुम ऐसी लाईलाज अवस्था में पहुँचने से पहले उनसे मोक्ष पाने का गहरा संग्राम करो।"

-सुरजीत बराड़

अपने जीवन का फिकर

साधारण इन्सान अपनी दुनियादारी में सदा व्यस्त रहता है। दरअसल इन्सान के पास मरने के लिए वक्त ही वक्त है परन्तु अपने भले के लिए कुछ मिनट तक का भी समय नहीं है। इन्सान के पास यह सोचने तक का वक्त नहीं है कि जो उसे जीवन मिला है उसकी सफलता कहाँ हैं? पहले हमारा बचपन खेल - कूद, पढ़ाई - लिखाई में गुजर जाता है, जवानी शादी, नौकरी ढूंढने, नौकरी करने, और बच्चे पैदा करने में और बुढ़ापा बच्चों को Settle करने में गुज़र जाता है। अपने जीवन का फिकर व उस पर चिन्तन का विषय हमारे सिलेबस में है ही नहीं।

साधारण इन्सान अक्सर यह कहता सुना जाता है कि "मैं बाकी दुनिया से ठीक हूँ। अगर मैं किसी का कोई भला नहीं करता तो किसी का बुरा भी नहीं करता।" परन्तु इस बात में सच्चाई नहीं है। इन्सान किसी को तो छोड़े अपनी भी दिन रात हानि ही करता रहता है। हमने यह विचार करना है कि क्या कभी हमने गलत खा खाकर अपने स्वास्थ्य की हानि की है? बेवक्त खा कर स्वास्थ्य नाशक चीजें खाकर, बार बार खाकर क्या हमने कभी अपने आपको रोग लगाए हैं?

अक्सर हम दूसरों को देखकर कहते हैं कि इस व्यक्ति में बहुत Ego है परन्तु हमें हमारी Ego दिखाई नहीं देती। क्या कभी हमें गुस्सा नहीं आता? क्या कभी हम अपने बड़े से अपने विरुद्ध सुनकर अपने मन में बुड़बुड़ नहीं करते, क्या हमने कभी अपने बड़ों के सामने जुबान नहीं खोली? क्या कभी हम अपने से छोटों पर नहीं बरसे और उन्हें नहीं मारा? अगर ऐसा किया है तो हम भी Ego के शिकार हैं और अपने जीवन के फिकर से बेफिक्र हैं।

अगर हम कोई गलती करते हैं तो पूछने पर हम अपनी गलती छुपाने के लिए झूठ बोलते हैं। यह हम इसलिए करते हैं कि हम नहीं चाहते कि हम किसी के सामने गलत साबित हों, दरअसल जो जितना अहं अनुरागी है, वह उतना ही झूठा बनता जाता है। जब कोई इन्सान हमारी तारीफ करे तो हम खुश होते हैं उसे अपना समझते हैं पर जब कोई हमारी निन्दा करे चाहे वो कितनी ही सच्ची क्यों न हो हमें बहुत बुरी लगती है। जब हमारी कोई इच्छा पूरी न करे तो भी हम अपने सुख पर चोट खाकर बुड़बुड़ करने लगते हैं।

अगर हमें कोई अच्छी बात बताए तो भी हम उसके अनुसार नहीं चलते, अपने हिसाब से चलते रहते हैं। किसी बच्चे को कहो कि यह लो पैसे और कोई चीज़ लाकर खा लो तो वह खुश हो जाता है परन्तु अगर उसे कहो कि यह चीज़ तुम्हारे लिए नहीं तब देखो वह कैसे आफत पैदा कर देगा। यह सब लक्षण अहं अनुराग के हैं। हमारे जीवन से क्या हर रोज़ बेजान चीज़ों, पौधों, पशुओं, मनुष्यों आदि के लिए सेवा निकलती है? अगर नहीं तो हम स्वार्थी हैं। अगर निकलती है तो किस भाव से? हम दूसरों से गुस्सा हो जाते हैं, नफरत करने लगते हैं, दूर हो जाते हैं उसका

कोई भला नहीं कर सकते। उसकी हानि करने व करवाने के लिए तैयार हो जाते हैं और कर भी देते हैं या उसकी हानि की खबर सुनकर खुश होते हैं, यह सब अहं अनुराग की निशानियां हैं।

हम अपने आपको सदा ठीक और निर्दोष देखते हैं। दरअसल हम अपने जीवन के फिकर से बेफिकर हैं। अहं अनुराग हमें अपनी बुद्धि, अपने विचार, अपने विश्वास और अपनी रुचि का पक्षपाती बनाता है।

हम धन के अनुरागी होकर धन को ही अपना लक्ष्य बना लेते हैं। धन कमाने में ही अपना सारा दिन गुज़ारते हैं। धन को अपने हित का साधन बनाने की बजाए उसे लक्ष्य बना लेते हैं। बेशक धन जीवन जीने और अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए आवश्यक है, परन्तु उस धन का लक्ष्य अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के भिन्न परोपकार विषयक काम में खर्च करना भी है। धन को इक्ट्ठा करने, उसे बढ़ाने और बढ़ता हुआ देख देखकर खुश होने और उसे परोपकार के काम अथवा अपनी किसी सच्ची ज़रूरत पर खर्च करते वक्त दु:ख मिलने का नाम ही धन का नीच अनुराग है। इस धन के नीच अनुराग ने ही सारी दुनिया को पागल बना रखा है और अपने जीवन के फिकर से बेफिक्र भी। धन अनुराग हमसे झूठ बुलवाता है, चोरी करवाता है। धन बचाने के लिए झूठे बिल तैयार किए जाते हैं। एक-एक संस्था का मालिक अपने कर्मचारियों को थोड़ा वेतन (तनख्वाह) देकर अधिक पर दस्तखत करवाता है। धन अनुराग मासूम बच्चों को उठाकर, उन्हें बेचकर व नौजवान लड़कियों का व्यापार आदि करके धन अनुरागी को अन्यायपूर्ण कृत्य करने के लिए मज़बूर करता है।

अपनी संतान का अनुराग, विशेषकर स्त्री संतान (बेटी) से बढ़कर पुरुष संतान (बेटे) का अनुराग। इस संतान अनुराग के कारण अपनी संतान की हर इच्छा का साथ देना, उनसे अपमान सहकर भी उनके लिए ही अपनी जिन्दगी को भेंट करना आदि अपने जीवन का नाश करना है।

हमारे अस्तित्त्व पर दिन रात उपकार हो रहे हैं। हवा, पानी, सूर्य की रौशनी, पेड़ पौधों की आक्सीजन, फल, सब्जियां, दवाईयां, अनाज, कपड़े, पशुओं का दूध, उनका Nature में balance बनाना, Pollination करना, साथी इन्सानों द्वारा दिन रात सेवाएं, माता पिता, भाई बहन, देशवासियों आदि की सेवाएं हम प्रति क्षण पा रहे हैं कि जिनके बिना हम जिन्दा ही नहीं रहे सकते। अगर हम अथाह उपकार पाकर भी कुछ भी बदले में सेवा नहीं करते तो हम अपने जीवन को खो रहे हैं और जीवन के हित से बेफिक्र हैं।

जब हमें कोई महान व्यक्ति महान नहीं दिखाई देता, उसके जैसा बनने की प्रेरणा पैदा नहीं होती, कोई उस जैसी छोटी मोटी गति नहीं निकलती तो हम अपने जीवन के संबंध में बेफिक्र हैं। अगर हम किसी मनुष्य, पशु, पौधे, बेजान वस्तु के लिए कुछ नहीं करते और सिर्फ अपने लिए जीते हैं व किसी अन्य का दुख दर्द हमें दिखाई नहीं देता तो हम जीवन के हित से बेसुध हैं।

अगर हमें अपना कोई नीच जीवन दिखाई नहीं देता, हम अपने आपको सदा ठीक समझकर जीवन व्यतीत करते हैं। तो हम घोर अंधकार के जीव हैं।

दरअसल हम अपने जीवन के लिहाज से बेसुध, बेध्यान, बौखलाए हुए और पागल हैं।

प्र० अपने जीवन का फिकर कैसे पैदा हो?

उ० अपने जीवन के संबंध में सच्चा फिकर पैदा करने के लिए सबसे पहले उच्च वातावरण के उच्च प्रभावों की जरूरत है। अगर किसी व्यक्ति ने स्वाद अनुराग से रक्षा पानी हो तो वह ऐसे जनों की उच्च संगत में रहे जो उससे बचे हुए हों। किसी ने अगर अहं अनुराग से रक्षा पानी हो तो उन जनों की संगत करे कि जो उससे खुद बचे हुए हों या बचने के संग्राम में लगे हुए हों। अगर किसी ने श्रद्धा भाव, कृतज्ञता भाव आदि उच्च भाव पैदा करने हों तो उसे वैसे ही उच्च जनों की संगत करनी चाहिए। उसे ऐसी ही पुस्तकों का पाठ करना चाहिए कि जिनमें उन विषयों के बारे में उच्च आत्माओं के लेख और गीत आदि दर्ज हों। उसे उन नीच आत्माओं की संगत से अपनी रक्षा करनी चाहिए जो किसी नीच भाव को बढ़ाते अथवा प्रेरित करते हों। सबसे जरूरी साधन यह है कि वह परम पूजनीय भगवान देवात्मा से उनकी देव ज्योति और देव तेज के लिए सरल भाव से प्रार्थना करे और उस देव ज्योति में अपने नीच जीवन के प्रत्येक कोष की धीरे-धीरे लगातार पड़ताल करे और पूजनीय भगवान के देव तेज को प्राप्त करके सच्चे शुद्धि विषयक त्याग और साधन ग्रहण करे। यही सच्ची मोक्ष का मार्ग है।

-गौतम गोनियाना

तर्क शक्ति का अभाव

साधारणत: जब कोई भी पाप मूलक क्रिया होती है चाहे कोई नशा करता है, मांस खाता है, जुआ खेलता है, बेईमानी करता है, बलात्कार करता है आदि-आदि तो ऐसी क्रियाओं को अक्सर सब ग़लत या पाप मूलक क्रियाएं मानते हैं, परन्तु धर्म के नाम पर जो मिथ्या विश्वास फैले हुए हैं और अब भी जोर शोर से फैलाए जा रहे हैं, उनको न केवल मिथ्या ही नहीं समझा जाता बल्कि उन्हें धार्मिक क्रियाएं समझकर तर्कहीन जनता इस प्रकार की मिथ्या फैलाने वाले बाबाओं, पुरोहितों, पंडितों आदि के पीछे लगकर आस्था के नाम पर अपने धन की और समय की घोर बर्बादी करती है।

अब भी करोड़ों लोग यह विश्वास करते हैं कि कोई ईश्वर या खुदा के नाम का वजूद इस संसार को चला रहा है। जो कुछ भी संसार में होता है वह सब उसी की इच्छा से ही होता है उसकी इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता। अनेकों इन्सानों ने तर्क के दरवाजे बन्द किए हुए हैं, इसलिए अन्ध विश्वासी यह नहीं सोचते कि दुनिया में पाप, अत्याचार, अन्याय, हत्याएँ, अपहरण, बलात्कार, निर्दयता और युद्धों आदि के जो नारकीय दृश्य हैं और महामारियाँ, कैंसर जैसे घातक रोग हैं, दुर्घटनाएं हैं, भुखमरी व दरिद्रता

और ध्वंसकारी भुकम्प और भुचाल आदि होते हैं असंख्य इन्सान जो राक्षसी क्रियाएं करते हैं, साम्प्रदायिक दंगे धर्म के नाम पर होते हैं, क्या यह सब खुदा व ईश्वर की मर्ज़ी से होते हैं? यदि यह उनकी मर्ज़ी से होते हैं, तो यहां की कोर्ट कचहरियों में केसों की भरमार क्यों हो रही है, सबको परमात्मा की कचहरी में ही जाना चाहिए, क्योंकि सारे के सारे कर्म तो जन्म जन्म से परमात्मा या खुदा ही करवाता है, तब फरियाद किसके पास करें? मिथ्या और स्वार्थी धर्म के संचालन करने वालों ने अन्ध विश्वासियों की आंखो पर ऐसी मोटी पट्टी बांध दी है कि तर्क का कोई स्थान ही नहीं रहा। हम उन बच्चों को अधिक बुद्धिमान समझते हैं जो 'क्या' और 'क्यों' के प्रश्न करते हैं और अपना ज्ञान बढ़ाते हैं, लेकिन बड़े होकर वह भी तर्कहीन हो जाते हैं। धर्म संस्थान , मन्दिर आदि ढह जाते हैं, उनमें चोरियाँ हो जाती हैं, भक्तों की जानें चली जाती हैं, फिर भी समझ नहीं आता कि देवी देवतों में अगर कोई ऐसी शक्ति होती तो क्या वह अपने मन्दिरों की भी रक्षा करके उन्हें न बचाते?

1) सोमनाथ मन्दिर के ऊपर 7 बार हमला हुआ, अन्ध विश्वासी भक्त वहां पर उनका मुकाबला करने के स्थान पर लेट कर प्रार्थनाएं करने लगे कि हमें हमारा देवता बचाएगा और विदेशियों ने न केवल मन्दिर को लूटा बल्कि उन सबको भी मौत के घाट उतार दिया। मन्दिर की रक्षा न देवता कर सका और न ही अन्ध विश्वासी भक्त।

2) राजस्थान के हिंडोली में पार्वती की मूर्ति चोरी हो गई। मन्दिर के देवता मूर्ति को चोरों से नहीं बचा सके। विश्वास करते हैं कि मूर्ति चुराने से जल्दी शादी हो जाएगी। एक स्त्री ने बताया कि उसकी उम्र 60 साल की है, उसके सामने पार्वती जी की अब तक 60 मूर्तियां चुराई जा चुकी हैं। प्रश्न तो करें कि जिस मन्दिर के देवता ने मन्दिर की मूर्ति चुराते देखकर कुछ नहीं किया तो वह हमारी और हमारी बहू बेटियों की रक्षा कैसे करेंगे?

3) अयोध्या में राम मन्दिर कितने करोड़ में बना, पहली बारिश में ही मन्दिर के भव्य ग्रह में पानी रिस गया। भवन की हर प्रकार की सुरक्षा व मूजबूती की गारंटी 1000 साल की दी गई थी। राम जी देखते रह गए, कुछ नहीं कर सके, तो वह हमारे घरों की सुरक्षा कैसे करेंगे? राम जी महापुरुष थे, उनके जीवन की बहुत सी घटनाएं अनुकर्णीय हैं, परन्तु उनको धारण करने की शिक्षा तो कहीं नहीं दी जाती लेकिन वह हमारे सभी प्रकार के दुःख हर सकते हैं यह अन्ध विश्वास जरूर फैलाया जाता हैं।

4) जून के महीने में नयना देवी के दर्शन करने आए भक्तों में पहाड़ी से पत्थर गिरने की अफवाह से भगदड़ मच गई 116 जनों की मौत 150 घायल हुए। 16 साल पहले भी नयना देवी में ऐसा ही हादसा हुआ था। वहां पर भी देवी देवता भक्तों की रक्षा नहीं कर सके। तर्क से सोचें कि वह हमारी मनोकामनाएं कैसे पूरी करेंगे?

5) उतराखण्ड मनमीत नैनीताल में देवी की कृपा पाने के लिए एक दूसरे पर पत्थरों की बौछार की जाती है। जब तक शरीरों से खून न निकले तब तक यह क्रिया जारी रखी जाती है।

पिछले दिनों 40 हज़ार लोग इसे देखने पहुँचे। इसमें 100 से अधिक लोग घायल हुए। ऐसी परंपराओं से देवी खुश होती है, लोग यह विश्वास करते रहें तो इससे अधिक अन्ध भक्ति क्या हो सकती है?

6) पिछले दिनों यू.पी. के हाथरस जिले में भोले बाबा के सत्संग में जो भगदड़ मची उसमें कितने लोगों की मौत हो गई और कितने ही लोग घायल हुए। भोले बाबा ने यू.पी. पुलिस में 18 साल नौकरी की थी, उन पर कई प्रकार के इल्ज़ाम हैं। परन्तु अन्ध भक्तों की भक्ति ने उन्हें करोड़ोंपति बना दिया, उनमें कौन सी मनोकामना पूरी करने की सामर्थ्य है यह तर्क से सोचने की बात है। अपनी सुख की कामनाओं को पूरा करने की इच्छा से अन्ध भक्त बलात्कारियों की भी पूजा कर रहे हैं जो अपने कुकर्मों के कारण जेल में हैं। अन्ध विश्वासों और झूठे दिलासों (मिथ्या) ने लोगों को इतना अन्धा कर दिया है कि तर्क से काम लेना सम्भव ही नहीं रहा।

7) सिरसा स्थित सच्चे सौदे के मुखिया राम रहीम कत्ल और बलात्कार के इल्ज़ाम के कारण जेल में है, उन्होंने फरलो की अर्ज़ी इसलिए दी है कि श्रद्धांजली भंडारा होना है, वहां अन्ध भक्त उनको सिर आंखों पर बिठाएंगे। स्त्रियां सबसे अधिक श्रद्धा दिखाती हैं, उन्हें यह ही समझ नहीं आता कि बलात्कार स्त्रियों से ही होता है। जिनके हाथों स्त्रियों की इज्ज़त सुरक्षित नहीं, वह पूजा व श्रद्धा के योग्य कैसे हो गए? तर्क शक्ति के बिना स्वार्थी बाबा अन्ध विश्वास फैलाते रहेंगे और अन्ध विश्वासी व तर्कहीन जनता लुटती ही रहेगी।

8) पिछले दिनों भगवान जगननाथ की मूर्ति को 108 घड़े पानी से नहलाया गया, फिर वह 14 दिन के लिए एकांतवास में चले गए, उन्हें बुख़ार हो गया और हकीमों ने जड़ी बूटियों से उनका ईलाज किया। फिर उन्हें नये वस्त्र पहनाएं और उनको लेकर रथयात्रा निकाली गई। इस समारोह में पूर्व कंजर्वेटर फारिस्ट दविद्र दलाई, पी.जी.आई के प्रोफैसर आर.के. राठीं समेत कई श्रद्धालु पदाधिकारी शामिल हुए। रथ यात्रा के 9 दिन बाद भगवान 9 दिन मौसी के घर में रहेंगे। फिर पत्नी लक्ष्मी के मनाने पर वह मन्दिर में स्थान ग्रहण करेंगे। पत्नी के द्वारा उन्हें स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जाएंगे। कल्पना शक्ति ने सब मूर्तियों को जिन्दा रूप दे दिया है। जिसके कारण मूर्तियों को नहलाने-धुलाने लगे, मूर्तियों के मुंह में मिठाईयाँ और भोग लगाने-खिलाने लगे और तो और उन्हें सुलाया भी जाने लगा फिर उन्हें उठाया जाता है, सर्दी-गर्मी से बचाने के लिए तरह-तरह के उपाय किए जाते हैं और उन्हीं प्रतिमाओं के लिए लड़ाई-झगड़ों की भी भरमार है।

इसलिए नितान्त आवश्यकता है कि हम किसी आस्था व संस्कार वश अपने विश्वास न बनाएं। धर्मों के ठेकेदारों ने जो हमारे मन में डर डाले हुए हैं, कि यदि आप विश्वास नहीं करोगे तो आपकी हानि हो जाएगी सब मिथ्या है। निडर होकर तर्क करो कि क्या सम्भव है और क्या असम्भव है। जो सच्चाई नेचर की सत्य घटनाओं व अटल नियमों पर आधारित है, केवल वह सत्य है और तर्क के द्वारा ही उसको समझा जा सकता है।

-सुरजीत बराड़

देव प्रभावों की एक दिल पर आज के युग में विजय

भगवान देवात्मा संस्थापक देव समाज को इस पृथ्वी को छोड़कर देव लोक गमन किए लगभग 80 वर्ष से ऊपर का समय हो चुका था। राजस्थान के एक शहर में देव समाज के दो कर्मचारी वर्षो से अपने भगवान के मिशन का काम कर रहे थे। उनकी सभाओं में देव प्रभावों का ऐसा कार्य हुआ कि एक व्यक्ति का जीवन बदल कर कोयले से हीरा बन गया। वो अब भगवान देवात्मा के सेवक बन चुके हैं। वह लिखते हैं :-

देव समाज से जुड़ने के बाद मुझ में आए हुए परिवर्तन

1) **व्यसनों से दूरी :-** देव समाज में आने से पहले मैं सिगरेट, बीड़ी व शराब का सेवन करता था। मैं शराब का business करता था। सिगरेट, बीड़ी व शराब का बिजनेस देव समाज में आने से कुछ समय पहले ही छोड़ चुका था परंतु शराब का सेवन लगातार करता रहा। सन 2010 के दिसंबर में मैं देव समाज की सभा में आने लगा। सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की प्रेरणा से 2014 में मैंने शराब ना पीने की प्रतिज्ञा की व उसके कुछ समय बाद मैं देव समाज का सेवक बना। यह मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य था। देव समाज का सेवक बनने के बाद कुछ - कुछ सोझी आई कि यदि मुझे देव समाज की शिक्षा न मिलती तो निश्चित ही मैं बहुत बर्बाद हो जाता। इसी समाज में आकर सुना कि जिस चीज (शराब, सिगरेट आदि) का नाम लेने से कई कुलों का नाश हो जाता है, वह कितनी बुरी चीज है? मेरा सौभाग्य है कि मैं इनसे बच गया।

2) **परिवार व पत्नी के साथ संबंधों में सुधार हुआ।** देव समाज में आने से पहले अन्य पारिवारिक जनों व अपनी पत्नी से भी संबंध अच्छे नहीं थे। परिवार में मैं अपने आप को बहुत अच्छा व दूसरों को अपने से कम अच्छा अथवा ज्यादातर दूसरों को बुरा ही समझता रहा। देव समाज में आने के बाद अपनी कमियों की ओर ध्यान गया और संबंधों में सुधार आने लगा। अब कभी कुछ ऐसा मनमुटाव का क्षण आता है तो सबसे पहले अपनी कमी देखता हूं कि कहीं इसकी वजह मैं तो नहीं हूं और सचमुच में मुझे अपनी ही गलतियों का एहसास होता है। मेरी पत्नी श्वास रोग से काफी समय से पीड़ित है। पहले मुझे उसके रोगी होने की भी कुछ समझ नहीं थी और मैं अक्सर कह देता था कि यह रोग मैने तो तुम्हें नहीं लगाया, मैं क्या करूं? दवाई दिला देता हूं और मैं क्या कर सकता हूं? इससे ज्यादा और उनकी मदद करने की ओर कोई ध्यान नहीं जाता था। डाक्टर भी कहते रहे कि इन्हें धूल मिट्टी व धुएं आदि से बचा कर रखें, परंतु मैं कोई ध्यान नहीं देता था। एक बार महोत्सव की सभा में मुझे श्रद्धेय श्रीमान पी. वी. कनल जी की लिखी घटना सुनने को मिली। इस सभा को सुनने पर मेरे दिल पर जादू सा असर होना शुरू हो गया। यह सभा सुनने के बाद मैं कमरे में आकर चारपाई पर लेट गया और सोचने लगा कि मुझे भी अपनी बीमार पत्नी की मदद करनी चाहिए। पहले मैं यह कहकर अपना पल्ला झाड़ लेता था कि अपनी कम कमाई के कारण मैं नौकर तो नहीं रख सकता, परंतु अब सोच बदल रही थी। सोच पैदा हो रही थी कि मैं काम में मदद तो कर ही सकता हूं। मैं महोत्सव से आने के बाद उनसे सब्जी आदि जिसमें तेल, घी जलते हों, वह उनसे बनवाना बंद

कर दिया और स्वयं बनाने लगा। झाड़ू लगवाना बंद कर दिया और स्वयं लगाने लगा ताकि उन्हें धूल व धुएं आदि से परेशानी न हो और बाकी कामों में भी साथ देने लगा। पहले पहले थोड़ा मुश्किल लगा, लेकिन अब आदत हो गई है। ऐसा करके हमें जो लाभ हुआ है वह अब हमें सुकून देता है। उनकी तकलीफ काफी कम हो गई है, जो पहले कभी दिखाई ही नहीं देती थी, वह अब दिखाई देने लगी है। अब दवा भी कम लेनी पड़ती है। सम्बन्धों में भी काफी सुधार हो गया है। यह सब भगवान देव आत्मा की शिक्षा व देव समाज से जुड़ने का ही फल हमें मिला है।

3) अपने भाई के साथ संबंध सुधरे:- "खुशनसीबी से यहां आना हमारा हो गया" जब भी इस भजन की यह पंक्ति मेरे सामने आती है तो मुझे लगता है जैसे यह मेरे लिए ही गाया गया भजन है, क्योंकि देव समाज में आने से पहले मैं किसी सत्संग व सभा में नहीं जाता था। विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी व श्रीमान बलबहादुर सिंह जी दोनों सभा करवाने पदमपुर व श्रीगंगानगर कई वर्षों से आते रहते थे। जिसका मुझे कुछ भी पता नहीं था। मेरे एक मित्र पदमपुर निवासी (अब परलोकवासी) मनोहर लाल जी कालड़ा यह सभाएं सुनते थे। वह सेवक भी नहीं बने हुए थे। वह मुझे सभा में आने के लिए प्रेरित करते रहते थे। परन्तु मैं उन्हें हर बार टाल देता था व उनसे कह देता था कि यह सब संत, महात्मा व प्रचारक एक जैसे ही होते हैं, बाकि इनका बोलने का ढंग तरीका अलग-अलग लुभावना हो सकता है।

एक बार दिसंबर 2010 में दोनों श्रीमान जी सभा करवाने N ब्लॉक श्रीगंगानगर में आए हुए थे। और श्री मनोहर लाल जी सभा सुनने के लिए मेरे पास श्रीगंगानगर में रुके हुए थे। शाम को पहली सभा होनी थी। मनोहर लाल जी मुझे भी चलने के लिए कहने लगे। पहले तो मैंने अपने स्वभाव के अनुसार उन्हें जाने से मना कर दिया कि आप ही हो आएं, लेकिन वह मुझे ले जाने ही आए थे। वह कहने लगे कि मुझे अकेले को जाना पड़ेगा, आप मेरा साथ देने के लिए ही चल पड़ो, एक या डेढ़ घंटे की तो बात है और मैं उनके साथ चलने के लिए राजी हो गया। वहां हाल में पीछे की जगह कुर्सियां लगी हुई थी। हम वहां जाकर बैठ गए और सभा सुनने लगे। बड़े श्रीमान बलदेव सिंह जी सभा करवा रहे थे। उस सभा में श्रीमान जी बता रहे थे कि मैं एक बार बठिंडा स्टेशन से मंदिर की ओर आ रहा था तो रास्ते में सड़क के एक तरफ रामलीला चल रही थी। उसमें राम बनवास का प्रसंग चल रहा था और भरत बहुत व्याकुल होकर अपने भाई के लिए रो रहे थे। वह दृश्य उन्हें बहुत प्रभावित कर रहा था। यह दृश्य तो रामलीला में मैने भी कई बार सुने हुए थे। फिर श्रीमान जी ने इस सभा में अपने भाई के संबंध में बताया कि जब हमारा जमीन जायदाद का बंटवारा हुआ, तब मेरे ऊपर भगवान देव आत्मा की कृपा हुई थी। मेरे बहनोई के रोकने के बाद भी मेरे भाई ने जो जो मांगा मैं उन्हें देता गया कि जो मेरे हिस्से से अधिक का था, मैंने उन्हें खुशी-खुशी दे दिया। मुझे लगा दूसरों की बातें तो सब कर लेते हैं। भगवान राम की बातें भी कर लेते हैं, परंतु स्वयं अनुसरण नहीं करते हैं। श्रीमान जी असल में सच्चे संत हैं। यहां मैं बताना चाहता हूं कि मेरे अपने भाई के साथ मेरे संबंध बहुत खराब थे। संबंध इतने खराब थे कि लगभग 10 साल से हमारी आपस में बोलचाल नहीं थी और मैं उन्हें देखना भी पसंद नहीं करता था। यहां तक कि

जब हमारे यहां कोई शादी व परिवार में कोई प्रोग्राम होता तो हम दूर-दूर बैठते व दूर-दूर ही रहते। हमारी बहनें व परिवार के दूसरे सदस्य भी दुखी रहते थे। वह हमें आपस में मिलाने की सभी कोशिशें करके थक चुके थे। मेरे बड़े बहनोई समझा समझा कर परलोक सिधार चुके थे। मेरे परिवार वालों ने यह सोचकर फिर छोटे बहनोई को यह जिम्मा सौंप दिया कि शायद उनकी बात मानकर अब यह एक हो जाएं। उन्होंने भी मुझ पर बहुत दबाव बनाया पर मैंने तंग आकर उन्हें भी कह दिया आप मुझे उनसे बोलने की बात कहते हैं, मैं यदि मर रहा होऊँ और आप मुझे यह कहें कि दवाई है जो तुम्हारे भाई के पास है, यह दवाई वह दे भी रहा है और आप कहें कि वह दवाई खाकर तुम बच सकते हो व ठीक हो सकते हो, तो भी मैं उस भाई की दी हुई दवाई खाने से अच्छा मर जाना पसंद करूंगा। मेरे जवाब को सुनकर वह मायूस व दुखी हो गए। फिर उन्होंने भी हमें बार-बार कहना बंद कर दिया। बड़े श्रीमान जी की उस सभा ने मुझ पर जादू किया। मुझे भी नहीं पता चला उस पहली सभा ने श्रीमान जी द्वारा अपने भाई के संबंध में बताए प्रसंग ने मेरे अंदर उथल-पुथल मचा दी कि एक यह भाई है जिन्होंने लाखों की संपत्ति अपने भाई को खुशी-खुशी देकर अपने भाई होने का प्रमाण दिया। मुझ में भी अपने भाई के प्रति पॉजिटिव विचार आने लगे। मैं घर पर आकर आराम करने के लिए लेटा किंतु नींद कोसों दूर थी। बार-बार वह सभा व श्रीमान जी के बोल मेरे सामने आ रहे थे। सुबह दूसरी सभा के लिए समय से पहले उठकर नहा धोकर तैयार हो गया। मनोहर लाल जी ने पूछा कि क्या चलोगे? मैने हां कर दी। मनोहर लाल जी हंसने लगे और कहने लगे कि मैंने आपसे कहा था, कि एक बार चल कर देखें। दूसरी सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। वह सभा भी बहुत प्रभावशाली थी। वह संबंधों पर ही आधारित थी। कुल चार सभाएं हुई जो मैंने सुनी। इनका मुझ पर काफी असर हुआ। यह लगा कि यह धर्म बाकी धर्म स्थानों वा सत्संगों से बिल्कुल अलग है। मेरा अपने भाई से मिलकर गिले शिकवे दूर करने का मन हो रहा था। मुझे अपनी गलती नजर आने लगी थी। मैं अपनी बड़ी बहन जी के घर चला गया और उन्हें सारी बात बताई। पहले तो वह हैरान हो गई और थोड़ी परेशान भी हो गई और रोने लगी, मैं भी रोने लगा। फिर वह कुछ शांत हुई। उन्होंने छोटे बहनोई और बहन से बात करने की सलाह दी, जो मैंने मानकर अपने छोटे बहनोई को फोन पर बात बताई। वह भी पहले मेरी बात सुनकर हैरान हो गए। पहली ट्रेन द्वारा वह श्रीगंगानगर आ गए और वहां आकर मेरे से बार-बार पूछने लगे ऐसा कैसे हो गया। ऐसे कौन से सभा करवाने वाले महान लोग आए, जिनको सुनकर आपका मन बदल गया। मैंने उन्हें सारी बात श्रीमान जी की सभा की बताई और कहा, मुझे सच्चे संत के दर्शन हुए हैं। वह मुझे अपने साथ लेकर मेरे भाई के घर गए। गुरु के असरों और श्रीमान जी की कृपा से हमारा आपस में संबंध मीठा हो गया। अभी कुछ समय पहले सितंबर 2023 में अंबाला एक शादी में जाने का प्रोग्राम बना। हम दोनों भाई और हमारी भाभी वहां गए। शादी समारोह में शिरकत करने के बाद मेरे भाई ने श्रीमान जी के दर्शन करने की इच्छा जताई। हम श्रीमान जी के घर चंडीगढ़ गए और उनके दर्शन किए। (अब इनका अपने भाई से संबंध बहुत सुन्दर बन गया है।) (जून 2024)

बाकी अगले अंक में.....

आत्मिक उच्च जीवन का एक विचित्र नुस्खा

मनुष्य के नाना प्रकार के पापों और दुखों का मूल कारण सुख अनुराग है। प्रत्येक मनुष्य की निज की व पारिवारिक व अन्य उलझनें नीच सुख अनुराग से ही उत्पन्न होती हैं। यह सब मनुष्य के उत्पन्न किए हुए दुख और उलझनें जिस नुस्खे से सुलझ जाती हैं, वह नुस्खा आत्मिक उच्च जीवन का नुस्खा है।

एक लेखक ने एक कविता लिखी है, जिस में उन्होंने यह साबित करने की कोशिश की है कि पारिवारिक उलझनें किस नुस्खे के सेवन से सुलझ जाती हैं। एक साठ साल के बूढ़े ने निहायत ही सुन्दर नौजवान 18 साल की लड़की के साथ शादी की, शादी करने के बाद जब वह बूढ़ा अपनी पत्नी को घर में लाया और उसको देखा तो उसका हृदय दुख से भर गया और उसको कहने लगा कि हे सुन्दरी! मैंने और तुम्हारे माता पिता ने तुम पर बहुत बड़ा अन्याय किया कि जो मेरे साथ तुम्हें विवाह सूत्र से बांध दिया। इस पर उस सुन्दरी ने कहा कि हे पति देव! पत्नी के लिए यह सोचना भी अनुचित है कि जिसको मैंने पति बनाया है, वह जवान है या बूढ़ा, वह साहूकार है या गरीब, वह सेहतमन्द है या बीमार, वह इस कुल का है व उस कुल का आदि, पति तो पति है। जिसकी सेवा करना पत्नी का कर्त्तव्य है। शादी की संस्था मौज बहार के लिए नहीं बनाई गई, शादी की संस्था एक धर्म है, जिसके सम्बन्ध में उच्च कर्त्तव्य हैं। जिन उच्च कर्त्तव्यों को पालन करना पति पत्नी दोनों का कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य पालन में ही सुख ढूंढना पति पत्नी दोनों के लिए आवश्यक है। मैं आपकी सेवा के लिए ही आई हूं। मैं आपके परिवार को स्वर्गीय बनाने आई हूं। मुझे आप आशीर्वाद दें, कि अपने इस उद्देश्य में सफल काम हो सकूं। यह कहकर उस सुन्दरी ने अपने पति के चरणों में शीश रखा और शुभ आशीर्वाद मांगा।

इस बूढ़े पति की पहली पत्नी से सन्तान थी, एक लड़का था और एक लड़की। लड़की की शादी हो चुकी थी और वह अपने ससुराल में थी। लड़की अपने पिता के विवाह के बाद अपने पीहर नहीं आई थी। वह यह बरदाश्त ही नहीं कर सकती थी कि उसकी जगह कोई और स्त्री आकर उसकी माता के कपड़ों और गहनों को पहनती रहे। अपने सौतेले लड़के को इस सौतेली माता, परन्तु दर असल सच्ची देवी ने अपनी सेवाओं से जीत लिया था। एक दिन अपने सरल और उच्च भावों से इस देवी ने अपने सौतेले बेटे को पास बिठा कर कहा कि बेटा! मुझे इस बात का अत्यन्त दुख है कि तुम्हारी बहन मेरे इस घर में आने के कारण अपने मायके भी नहीं आती है। मैं इस परिवार का सुख बढ़ाने के लिए आई हूं, न कि दुख बढ़ाने के लिए, किसी विधि से तुम अपनी बहन को एक बार यहां पर लाओ, फिर यह मेरा धर्म है कि मैं उसको अपने निकट कर लूं। इस लड़के का दिल भर आया और उसने अपनी माता को कहा कि माता जी! जैसा तुम ने मुझे प्यार किया और सुख दिया है, वह अपनी माता से कम नहीं है। स्वार्थ परता के कारण साधारणत: कुछ

सौतेली माताओं ने जो निर्दयता के बर्ताव किए हैं, उसके कारण सौतेली मां के शब्द के लिए ही लोग सच्चा डर उत्पन्न कर देते हैं। तुम तो मेरी सच्ची माता हो। बहन जब तुम्हारे बर्तावों को देखेगी, तो आठ आठ आंसू रोएगी, कि तुम्हारे इस नए सम्बन्ध में अपने घर बैठे हुए क्यों दुश्चिन्ता की।

यह लड़का अपनी बहन के पास पहुंचा, और उसको ले ही आया। इस लड़की के आने के एक दो दिन बाद इस विचित्र माता ने अपनी सौतेली बेटी को अपनी चारपाई पर बिठा कर बहुत प्यार किया, और उसके पास जेवरों का डिब्बा रखकर कहा, कि बेटी ! यह जेवर तुम्हारे हैं मेरे नहीं, यह तुम्हारी माता जी ने ही बनवाए थे और उनकी तरफ से मैं तुम्हें अर्पण करती हूं। मुझे तुम्हारे पिता जी ने बहुत कुछ दे दिया है। यह कह कर अपनी बेटी को जेवर पहनाने आरम्भ कर दिए। बेटी ने बहुत रोका, परन्तु इस विचित्र माता ने उसे सब जेवर पहना कर उसको बहुत प्यार किया और उसको कहा कि इन जेवरों से तुम कैसी सुन्दर हो गई हो। यह लड़की अपनी माता के विचित्र और निःस्वार्थ स्वभाव को देखकर इस कदर लज्जित हुई कि जिसका ब्यान नहीं हो सकता। माता का रूप धारण करने से वह सौतेली माता एक सात्विक रूपधारी माता हो गई।

इस माता ने अपने बेटे की बहुत धूमधाम से शादी की। इस बहू की भी इस माता ने बहुत अच्छे भावों से सेवा करनी आरम्भ की, परन्तु पड़ोसी स्त्रियों ने उस नई बहू को अपनी सास के खिलाफ भड़काना आरम्भ किया और यह कहा कि मूर्ख लड़की तुम्हारी सास बहुत चालाक स्त्री है। इसने अपनी चालाकियों से तुम्हारे पति को उल्लू बनाया हुआ है और तुम्हारे ससुर को बिल्कुल अन्धा बना दिया है, यह जादूगरनी है। यह तो सबके ऊपर अपना जादू चला रही है। अगर ऐसी धार्मिक है, तो भला घर की सब चाबियां अपने पास क्यों रखती है ? बहू का दिल खराब हो गया। वह दिल ही दिल में सास की दुश्मन बन गई। एक रात की घटना है कि इस बहू ने अपने पति के लिए जहन्नुम खड़ा कर दिया। वह अपनी सास की निन्दा करने से नहीं हटती थी, उसका पति बार बार उसको कहता था कि मैं और सब कुछ बरदाश्त कर लूंगा, मगर अपनी माता जी की निन्दा बरदाश्त नहीं करूंगा। परन्तु वह बन्द न हुई। आखिरकार वह लड़का अपनी पत्नी के बुरे बर्ताव से तंग आकर अपना कमरा छोड़कर दूसरे कमरे में सोने के लिए चला गया। जब वह सीढ़ियों से उतर रहा था तो उसकी माता जाग उठी और अपने कमरे से बाहर आ गई और बेटे से पूछा कि बेटा! क्या बात है, तुम कहां जा रहे हो? उसने कहा, कि मैं अपनी पत्नी के साथ रह नहीं सकता। वह बार बार आपकी निन्दा करती है मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। इसलिए मैं नीचे के कमरे में जाकर सोता हूं। माता ने कहा कि बेटा! तुम ड्राईग रूम में जाकर बैठ जाओ, मैं बहू को ठीक करके आती हूं, वह ऊपर गई और बहू को गले लगाया और प्यार किया और कहा कि बेटी! मैं तो इस परिवार के लिए भेंट चढ़ी हूं। मेरे पास केवल यह चाबियां हैं, सम्भव है तुम्हें पड़ोसियों ने भड़काया हो, कि यह चाबियां रखती है, यह लो चाबियां और आखिरकार तुमने ही घर सम्भालना है, अभी से सम्भालना आरम्भ कर दो। सास के

इस बर्ताव से लड़की का दिल इस कदर भर आया, कि वह धाएं मारकर रोने लगी और कहने लगी, कि मेरे पति सच्चे हैं जो बार बार कहते रहते हैं, कि माता जी तो देवी हैं। घर की चाबियां क्या आप हमारे जीवन की चाबियां रखने के योग्य हैं। इस प्रकार बहू का मामला इस माता ने हल कर दिया और परिवार को सच्चे अर्थो में एक स्वर्गीय परिवार बना दिया। उच्च अर्थात् सात्विक जीवन का कैसा सुन्दर और हितकर करिश्मा ! निजी और पारिवारिक उलझनों को सुलझाने का कैसा कीमती और विचित्र नुस्खा !!

एक मनोवैज्ञानिक जन ने इस विचित्र नुस्खे पर एक लेख लिखा था। उसने लिखा कि मेरे एक मित्र की बेटी जो बाह्यक रूप के विचार से बहुत सादा थी, अपने वजूद की तरफ से लापरवाह होती गई। वह न अच्छे कपड़े पहनती थी और न बालों को कंघी करती थी और सदा उदासीन और गमगीन रहती थी। वह लेखक लिखते हैं, कि मैंने उस लड़की से पूछा, कि बेटी! न तुम अच्छे कपड़े पहनती हो, न बालों को संवार कर बाहर निकलती हो और सदा उदास रहती हो, इसका क्या कारण है? उस लड़की ने कहा, कि पिता जी! मैं बदशक्ल हूं, अपने आपको क्या सजाऊं। मेरे जीवन में कौन दिलचस्पी लेगा? यह कहते हुए उसकी आंखों में आंसू आ गए। लेखक ने कहा, कि बेटी ! तुम मुझे पिता समझती हो, उसने कहा कि जी हां! पिता ने कहा कि मैं एक बहुत बड़ी पार्टी दे रहा हूं, मुझे तुम्हारी सख्त जरूरत है, मैं चाहता हूं कि तुम एक दर्जी के पास पहुंचो, और वह जिस ढंग के कपड़े तुम्हारे लिए बनाए, वह तुम पहन लो और एक नाई स्त्री के पास पहुंचो और वह जिस प्रकार के बाल तुम्हारे बनाए, उसे बनाने दो। शनिवार के दिन जब पार्टी होगी, तब तुम्हारा यह काम होगा कि जिस किसी जन को अकेला खड़ा देखो, उससे पूछो, कि वह किस किस बात में दिलचस्पी रखता है। वह मुझे आकर बता दो तो मैं उसकी दिलचस्पी का सामान उत्पन्न करूंगा। इस प्रकार अधिक से अधिक जनों से मिलकर पूछो। पार्टी का दिन आया और गुजर गया, पार्टी में आए हुए सब जन इस लड़की की सेवा और हमदर्दी का वर्णन करते हुए थकते नहीं थे। आठ दस पार्टियों में इसके इस प्रकार के बर्तावों ने इस कदर जादू का असर किया कि एक निहायत ही सुन्दर और बड़े घर का लड़का इस के साथ विवाह सूत्र में बन्धने के लिए इच्छुक हो गया। जो लड़की कहती थी कि मेरे साथ कौन शादी करेगा, उसके स्वभाव ने उसके जीवन को इस कदर आकर्षणीय बनाया कि एक अमीर का लड़का इस का पति बन गया और वह कभी नहीं पछताया कि मैंने इस लड़की के साथ क्यों शादी की। बल्कि वह कहता था कि मुझे इस लड़की के साथ शादी करने का अभिमान है। भगवान देवात्मा के श्री चरणों में आकर अगर कोई सब से अधिक लाभ सेवकों को होता है, तो वह यह है कि वह सेवाकारी व उच्च जीवन की कीमत को अनुभव करने लगते हैं और अल्पाधिक उसके पाने के संग्राम में लग जाते हैं। काश कि हम उच्च जीवन के इन सब सुन्दर फलों को देख और उपलब्ध कर सकें।

– श्रीमान पी. वी. कनल

देव धर्म में मोक्ष की क्या धारणा है ?

प्रत्येक मनुष्य की दो मूल इच्छाएं हैं। मनुष्य की पहली इच्छा है कि मैं सुखी रहूं और दूसरी इच्छा है कि मैं जिन्दा रहूं और मरूं ना। अगर कोई मनुष्य मरने की इच्छा व आत्महत्या भी करता है तो उसकी पहली मूल इच्छा अर्थात उसे अपने जीवन में सुख नहीं मिल रहा या वो बहुत अधिक दुखी है। इसलिए ही दुनियां में जितने धर्म और दर्शन हैं उनके अनुसार दुखों और जन्म मरण के चक्करों से मुक्त होना और परम आनंद लाभ करना ही मोक्ष है। इसीलिए धर्म के स्थानों पर जाने का मनुष्य का लक्ष्य भी यही है कि हमारे घरों में रोग, कलह क्लेश तथा दुखों का नाश हो और हमारे घरों में पुत्र, पैसा, तरक्की और सुख शांति आए।

देव धर्म, धर्म की दुनियां में बिल्कुल नई और विज्ञान मूलक दृष्टि रखता है। इसकी मोक्ष के संबंध में धारणा भी बाकी प्रचलित धर्मों और दर्शनों से बिल्कुल अलग है। देव धर्म का मानना है कि प्रत्येक दुख बुरा नहीं होता। देव धर्म के अनुसार दुख दो प्रकार के होते हैं उचित दुख और अनुचित दुख। अगर कोई व्यक्ति अपने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम और सैर करने का दुख उठाता है तो उसका यह दुख उठाना बुरा नहीं है। अगर कोई विद्यार्थी विद्वान बनने के लिए पढ़ाई करने का दुख उठाता है और अपनी परीक्षा के दिनों में दूसरे साथियों को खेल कूद का सुख लेते देखकर भी पढ़ाई करने का दुख उठाता है तो यह दुख भी बुरा दुख नहीं है। अगर कोई परोपकारी/सेवाकारी व्यक्ति दूसरों की सेवा करते वक्त दुख उठाता है तो उसका यह दुख बुरा दुख नहीं। अगर कोई महान व्यक्ति समाज की किसी बुराई को हटाने के लिए दुख उठाता है तो उसका यह दुख बुरा दुख नहीं है बल्कि बहुत वाजिब दुख है। अगर कोई वैज्ञानिक नई खोज करने में दुख उठाता है तो उसका यह दुख बुरा दुख नहीं। इसलिए बाकी धर्मों की तरह प्रत्येक दुख से मोक्ष पाना देव धर्म की मोक्ष की धारणा नहीं है। देव धर्म के अनुसार उपरोक्त प्रकार के दुख पाना मुनष्य के विकास के लिए जरूरी हैं और यह सब उचित दुख हैं।

प्रचलित धर्मों और दर्शन में मोक्ष पाने के लिए इंसान साधु बन जाते हैं ताकि उन्हें सम्बन्धों से जो दुख मिलता है उससे वो मोक्ष लाभ कर सकें। देव धर्म में अपने संबंधों और अपने कर्त्तव्य कर्म (duties towards family) को छोड़ कर साधु बन जाने को बहुत बड़ा पाप समझा जाता है। साधु बनकर दर दर भीख मांगना, कड़ी तपस्या के लिए गर्मी में आग तापना, सर्दी में निर्वस्त्र रहना, एक पांव पर खड़े रहना, अपने शरीर को तरह तरह के कष्ट देना अनुचित दुख हैं और इंसान को ऐसे दुख नहीं उठाने चाहिए।

देव धर्म के अनुसार सत्य मोक्ष क्या है ?

मनुष्य सुखों का दास है। वो वही खाता पीता, पहनता व करता है जिसमें उसे सुख मिले। वो ऐसी स्वाददायक चीजें खाता है जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं क्योंकि उसमें उसे सुख मिलता है। वह आराम करने में सुख लाभ करता है और चाहता है कि मैं कम से कम काम करूं और मुझे अधिक से अधिक धन लाभ हो। एक-एक जन नशे करने में सुख लाभ करता है चाहे इन नशों से उसके शरीर, दिमाग और रिश्तों

की कैसी ही हानि क्यों ना हो। एक-एक जन अपनी संतान और पत्नी के मोह अनुराग में उसकी हर अनुचित इच्छा को मानता है। इंसान पैसों का दास बनकर उसी को कमाने में अपना सारा जीवन लगा देता है। अपने व अपने पारिवारिक जनों की जरूरत में पैसा खर्च करने में उसे दुख होता है। परोपकार के कामों में धन खर्च करना नहीं चाहता। पैसों को ठगी, चोरी, बेईमानी से प्राप्त करना चाहता है। घमंडी बनकर दूसरों को दुखी करता है। अपने से कमजोरों को मारता पीटता है। जिन पर अपने घमंड से हमला नहीं कर सकता, उनसे दिल दिल में फट जाता है। अगर इंसान को गुस्सा करने में सुख मिलता है तो गुस्सा करता है। ईर्ष्या-द्वेष में सुख मिलता है तो ईर्ष्या-द्वेष करता है। अगर किसी सुख की प्राप्ति ना हो तो दुख से भर जाता है। उपरोक्त सुखों का दास होकर वह पाप और झूठ की गतियां करता है। इन पाप और झूठ की गतियों से मुक्त होना ही देव धर्म में मोक्ष की धारणा है।

देव धर्म में मोक्ष प्राप्त करने की क्या विधि है?

देव धर्म बताता है कि किसी व्यक्ति की किसी बुरी गति (झूठ और पाप की गतियों) से मोक्ष लाभ करने के लिए सबसे पहले उन गतियों के प्रति घृणा पैदा करनी पड़ती है। जब तक इंसान को अपनी कोई बुरी गति बुरी नहीं लगती, तब तक वह उसको छोड़ नहीं सकता। अच्छी पुस्तकें, उच्च जनों की संगत व देव प्रभाव दायक वातावरण जिसमें उस बुराई के लिए घृणा के असर हों, उसमें वास करके इंसान के अंदर उस बुराई के लिए घृणा पैदा हो सकती है और धीरे धीरे उस बुराई से इंसान की मोक्ष होती है। उससे आगे इंसान को अपनी पहले की हुई बुराइयों के लिए उच्च दुख पैदा हो जिससे उसे अपने पहले किए हुए पापों से मोक्ष मिल सकती है। सत्य मोक्ष का यही एक मार्ग है।

-गौतम गोनियाना

शुभ संग्राम

गोनियाना, 10.08.2024 (शनिवार) सुबह 8.30 बजे। सभापतिः श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- इस सभा में तीन चार नए जन शामिल हुए। ऑनलाइन भी कई धर्म संबंधी जुड़े हुए थे। सबसे पहले एक भजन "धन्य धन्य तुम मेरे सतगुरु ...." का गान किया गया। श्री सभापति जी ने फरमाया के नेचर में परिवर्तन का नियम काम करता है। हमारा शरीर बचपन से नौजवान और फिर बूढ़ा हो जाता है। धर्म की दुनिया में भी यही नियम है। उन्होंने बताया कि धर्म का काम है शरीर और आत्मा को बेहतर बनाना। शरीर के विकास के संबंध में तीन नियम बताए। उन्होंने बताया कि धर्म पाने से पहले इंसान को उन मोटे-मोटे आठ पापों से बचना पड़ेगा कि जो देव समाज छुड़वाती है। ईमानदार और पवित्र बनने से धर्म आता है। दूसरों के गुण देखने, उपकारियों की सेवा करने, अपनी गलतियों को देखने से आत्मा में धर्म के भाव पैदा होते हैं। सभापति जी ने भगत पूर्ण सिंह और मदर टेरेसा के जीवनों का वर्णन किया। एक थानेदार के जीवन में भगवान देवात्मा के देव प्रभावों से जो शुभ परिवर्तन आया था, उसका वर्णन किया। सभा के बाद सूचित किया गया कि यहां प्रति रविवार व शनिवार सभा हुआ करेगी। धर्म जीवन के अखबार

वर्तमान जनों को बांटे गए।

कल्याण 11.08.2024 दिन रविवार सुबह 8.30 बजे सभापति श्रीमान गौतम जी :- सबसे पहले सभापति जी ने "जीवन ज्योति के तुम सूर्य अंधेरा दूर करते हो" भजन का गान किया। सभापति जी ने फरमाया कि जहां ज्योति नहीं होती, अंधेरा होता है, वहां हानि होती है। भौतिक ज्योति के अभाव में कैसे एक वैज्ञानिक की जान चली गई उसका वर्णन किया गया। भौतिक रोशनी के न होने से कैसे हानि होती है और मानसिक रोशनी के न होने से कैसी हानि होती है उसको बताया गया। मानसिक रोशनी को समझाने के लिए श्रीमान सरदार सरमुख सिंह जी और श्रीमान बुध सिंह जी की घटना बताई गई। सात्विक रोशनी से दूसरों के दुख दर्द दिखाई देते हैं। सात्विक रोशनी को समझाने के लिए सर विद्यासागर जी की माता जी की घटना बताई गई। विकासक्रम को समझाते हुए सभापति जी ने भगवान देवात्मा के देव अनुरागों और उनके देव जीवन की घटनाओं को बताया और यह भी बताया गया कि कैसे देव आत्मा में देव ज्योति का विकास हुआ है। देव ज्योति ने कैसे एक सरदार जी के जीवन में परिवर्तन पैदा किया। सभा के अंत में श्रीमान ज्ञानचंद जी ने शहादत दी कि कैसे कल की सभा में उन्हें देव ज्योति मिली और अपना नीच घृणा करने वाला रूप दिखाई दिया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने भी देव ज्योति के बारे में कुछ ब्यान किया।

गोनियाना 16.08.2024 सुबह 9.00 बजे सभापतिः श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- सभा में सेवकों के अलावा एक नौजवान डॉक्टर, दो विद्यार्थी, एक तर्कशील सोसायटी के मैंबर शामिल थे। सबसे पहले "अद्वितीय है रूप तुम्हारा" भजन का गान किया गया। सभापति जी ने सवाल किया कि हमें कौन चलाता है? बताया गया कि हमें हमारे भाव चलाते हैं। नीच भाव नीच गतियां करवाते हैं और उच्च भाव उच्च गतियां करवाते हैं। हम अपने भावों द्वारा ही गतियां करके परिवर्तित होते हैं। सभापति जी ने दया के भाव की व्याख्या की। अन्य उच्च भावों की ओर भी हाजरीन का ध्यान फेरा। सभा बहुत प्रभावशाली थी।

कल्याण 18.08.2024 सुबह 8.30 बजे सभापति : श्रीमान गौतम जी :- सबसे पहले "सतगुरु तुमरी निराली शान है" भजन का गान किया गया। सभापति जी ने बताया कि बाकी धर्म के अवतार राक्षसी प्रकृति रखने वालों को मारने के लिए पैदा हुए हैं परंतु भगवान देवात्मा बुरी प्रकृति रखने वालों को नेक इंसान बनाने के लिए धर्म के अवतार पैदा हुए हैं। उन्होंने बताया है कि नेचर में चार जगत हैं - भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत। इन चारों जगतों के हमारे ऊपर बहुत सारे उपकार हैं। उनके साथ मेल की अवस्था में रहना ही धर्म है। हमें स्वार्थ में वह संबंध दिखाई नहीं देता और मनुष्य का यह बहुत बड़ा दुखांत है कि उसे अपने उपकारी भी दिखाई नहीं देते। माता-पिता ने हम पर बहुत उपकार किए हैं। वह हमारे जन्मदाता हैं, पालनकर्ता हैं, रक्षाकर्ता और शिक्षा दाता हैं। माता-पिता के संबंध में एक भजन का गान किया गया। भगवान देवात्मा ने कैसे कृतघ्न बच्चों को सेवाकारी बनाया है, इसके उदाहरण पेश किए गए।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सत्य धर्म बोध उत्सव

आपको यह जान कर खुशी होगी कि सत्य धर्म बोध उत्सव इस वर्ष भी हर वर्ष की तरह पूरे चावभाव से 13, 14, 15 सितम्बर 2024 दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार तक मनाया जा रहा है। इस वर्ष यह मुबारक उत्सव देव समाज (G) मन्दिर मल्लेंका जिला सिरसा में मनाया जा रहा है। आपकी सेवा में पुरज़ोर प्रार्थना है कि आप न केवल स्वयं ऐसे शुभ अवसर का लाभ उठाएं, बल्कि और अधिकारी आत्माओं को भी अधिक से अधिक संख्या में साथ लाकर सच्चे पुण्य के भागी बनें। सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा 13 सितम्बर 2024 शाम 5.30 बजे आरम्भ होगी।

प्रोग्राम

13 सितम्बर, 2024 दिन शुक्रवार

प्रवेश सभा : 5:30 बजे शाम
विषय : सत्य धर्म बोध की विशेषता।
यात्रियों का स्वागत।
सभा से लाभ उठाने की जरूरी शर्तें।
अगले दिन के प्रोग्रामों की सूचना।

14 सितम्बर, 2024 दिन शनिवार

पहली सभा : 9.00 बजे सुबह
विषय : आत्म अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ।
दूसरी सभा : 11:00 बजे
विषय : स्वास्तित्व सम्बंधी आदेशों का पाठ और व्याख्या।
तीसरी सभा : 5:30 बजे
विषय : भगवान देवात्मा के प्रभावों का अद्वितीय कारज।

15 सितम्बर, 2024 दिन रविवार

पहली सभा : 9.00 बजे सुबह
विषय : भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज, इस सम्बंधी हमारी जिम्मेवारियां। इस कारज के लिए धन और जन की अपील।
दूसरी सभा : 10.00 बजे
विषय : सभाओं से उठाए हुए लाभ का यात्रियों की ओर से वर्णन। (भाव प्रकाश)

सन्मान भाव से प्रार्थी
मन्त्री, देव समाज

:: आने की सूचना देने एवं व्यवस्था हेतु सम्पर्क करें ::

श्रीमान सुखदेव जोसन (मल्लेंका) 94167-94858 ॥ श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी 94161-68085

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक
"धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts